तिरुकुरळ् नागरी लिपि

शब्दार्थ सहित

(पहला भाग)

★

संकलन कर्ता

आर. शंकरन्, सेवाग्राम

दो शब्द

(१) राष्ट्र-भाषा हिन्दी का प्रचार करते समय हम बडे उत्साह से कहा करते थे कि तुलसी सूर आदि श्रेष्ठ कवियों के परिचय पाने के लिये भी हिन्दी सीखना लाभदायी है। आज कह रहा हूं कि तिरुवळ्ळुवर कम्बन् सुब्रमण्य भारती जैसे श्रेष्ठ कवियोंके साहित्य का अध्ययन मूलमें करने के लिए लोग तमिऴ सीखे। रूठे हुए तमिल भाई को अपनी ओर खींचे भी।

(२) मेरी पुस्तक 'तमिऴ प्रवेश नागरी लिपि' १९६७ में प्रकाशित हुई. गीतै पेरुरैहळ् तिरुक्कुरळ और सुब्रमण्य भारती की कविता आदी से चुने हुए अंश को छोटी छोटी पुस्तकों में प्रकाशन करने का मेरा संकल्प रहा। कई अनिवार्य अडचनों के कारण काफी देर बाद यह पुस्तिका प्रकाशित हो रही है। इसे एक नमूना समझें। इस तरह करीब एक सौ कुरळों को देना चाहता हूं। कुछ तैयार भी है; कुछ करना बाकी है।

(३) छोटे हिस्सों में देने का मुख्य कारण है। तमिऴ भाषा का मेरा ज्ञान अल्प है। 'तमिऴ प्रवेश' पुस्तक को पहले पढा कर फिर छापा। कुरळ आदि को ऐसा मौका नहीं मिला। पाठकों तथा अन्य विज्ञ मित्रोंकी सुझाव आदि को लेकर आगे और शुद्धरूप में दिया जा सकेगा। मेरे साथी हिन्दी प्रचारक श्री गो० कृष्णमूर्तिजी ने पांडुलिपि को देखकर संशोधन किया है।

(४) **इसमें जो दोहे दिये गये है वे मेरे नहीं हैं।** तमिळ भाषा-भाषी मित्रवर श्री. मु. गो० वैंकटकृष्णन् एम० ए० ने बडे परिश्रमसे तिरुक्कुरळ के सब पद्योंको दोहो में अनुवाद किया है, जिसे तिरुक्कुरळ प्रचार संघ, तिरुच्चि ने प्रकाशित किया है। उस ग्रन्थका भी समुचित प्रचार हो इस दृष्टिसे यहां उन दोहोंको दिया है।

यह पद्धति स्वीकार हो जाय तो आगे बढने में मदद मिलेगी। अन्य भाषीके लिये सुलभ हो इसी ख्यालसे यह संकलन किया गया है। मेरी स्थिति तो 'उद्बाहुरिव वामन:'

सेवाग्राम
ता० १८-१-७३

–रा. शंकरन्–
संकलन कर्ता

परंधाम मुद्रणालय, पवनार (वर्धा)

छपाई की गलतियां

पेज	पंक्ति	भूल	सुधार
३	शीर्षक	वऴत्तु	वाऴ्त्तु
४	१५	इरैवनुडैय	इऱैवनुडैय
	१६	इरुपपारानाल्	इरुप्पारानाल्
६	७	है	हैं
१४	३	इन्बम	इन्बम्
	८	शिरप्पु	शिऱप्पु
	१६	ला	भला
१७	६	पोरुत्तान्	पोऱुत्तान्
१८	२	यादोन्रुम्	यादोन्ऱुम्
१९	१ और ३	तीऱन्द	तीऱ्न्द
२०	सब स्थानपर	नेञ्जु	नेञ्ज़ु
२३	१५	सममनें	सममें
२९	आखिरी	शेर्वार्	शेय्वार्
३१	१	पहुत्ततुण्डु	पहुत्तुण्डु
	११	धर्मो म	धर्मो में

कहीं कहीं हलन्त चिन्ह छुट गये । पाठक संदर्भ के अनुसार समझ सकेंगे । क्योंकि तमिळ का परिचय होने के बाद ही इस पुस्तक को पढेंगे । मुद्रणालय को भी यह तमिळ भाषा का पहला पराक्रम है ।

रा. शंकरन्

श्री नन्द कुमार अवस्थी
लखनऊ - 3

यह पत्र मुझे देवनागरी में तमिळ
कार्य करने का आदेश जैसा रहा

१. लोकनागरी लीपी

अ. भा. सर्व सेवा संघ
पो.बा.नं. ४३ गया
ता०२८. ८.५४

श्री. शंकरन्

आपका हिन्दी तमिळ दोनों पत्र मिले। तमिळ ागरी में लिखा हुआ बहुत ही अच्छा लगा। **नागरी में हिन्दुस्तान बहुत सारी भाषाएं लिखने की रीवाज चले तो बहुत बडा ा होगा।** 'पटरी' शब्द लिखने में आपको तकलिफ हुई है। में र के नीचे एक नुकता दीजिएगा तो चल जाएगा।

आपने मुझ से मांग की है वह अभी तो मैं पूरी नहीं कर ूगा। तमिल भाषा पर मेरा प्रेम है। पर जीतना प्रेम है उतना ा नहीं है। और वह काम पूरे ज्ञान बिना नही हो सकेगा। ाके अलवा अभी मैं शांत समय कहां से नीकाल्ल सकूं? इलिए मननीक्क वेंडुम।

विनोबा
सही० तमिल में

इस पत्र के बाद कुरळ पेरुरैहळ
आदि का काम शुरु हुआ —

३. ग्रामदान-प्राप्ती समिति — कदमकुआ, पटना – ३
ता० २२-९-६५

श्री. शंकरन

हमको कोई बडे पैमाने पर प्रयत्न नही करना है। **तमिल भाषा सीखने के लिए अनुकूलता पैदा करना इतना ही हमारा कार्य।**

आपने नागरी लिपि में तमीळ पत्र मुझे लिखा है, वह मुझे बहुत अच्छा लगा। उस पद्धतिसे अगर तमीळ गीता-प्रवचन नागरी में छप जाय तो प्रचार का एक बहुत बडा साधन बनेगा। अनेक भाषाओं के गीता-प्रवचन उन उन लिपियों के अलावा नागरी में भी छपे हैं। तमीळ और मलयाळम रह गये हैं। क्योंकि पद्धती निश्चित नहीं होती थी। लेकिन अब पद्धती बन गयी इसलिए मार्ग खुल गया हैं।

हमारी यात्रा बहुत अच्छी तरह चल रही है।

विनोबा का जय जगत
सही – तमिल, हिंदी, अंग्रेजी

पहला अध्याय

कडवुळ् वऴत्तु : ईश-वन्दना

अहर मुदल अॅळुत्तॅल्लाम्
आदि बगवन् मूदट्ऱे उलहु ।।

अहर = अक्षर 'अ'; अकार; ।
मुदल = मूल, आरम्भ ।
अॅळुत्तु = अक्षर ।
अॅल्लाम = सब ।
आदि बगवन = आदि भगवान; ईश्वर, ।
मुदट्ऱे = मुदल + ए; उलहु = जगत, दुनिया, विश्व ।।

अर्थ हिन्दी

सब अक्षरों का अकार ही मूल है। उसी तरह सारे विश्व का मूल एक ईश्वर है।

तमिळ

अॅळुत्तुहळुक्कु अॅल्लाम् मुदल 'अ' अॅन्नुम् अॅळुत्तु। अदु पोल इन्द उलहत्तिन् मूल कारणमुम् ओरे कडवुळ् ।

दोहा

अक्षर सबका आदितो, है ही यथा अकार
सर्व लोक का आदि है, ईश्वर उसी प्रकार।

विशेष:

तमिऴ का ही नहीं, बल्कि संस्कृत आदि कई भाषाओं का भी अकार ही पहला अक्षर है।

अहर, आदि, बगवन, ये तीन संस्कृत शब्द हैं। 'उलहु' शब्द की उत्पत्ति भी 'लोक' शब्द से हुई है।

कट्ऱदनाल् आय पयन् अेन् कोल्
वालऱिवन् नट्ऱाळ् तोऴा (अ)र् अेनिन् ।।

वालऱिवन् = शुद्ध-ज्ञान-स्वरूप ईश्वर के ।
नट्ऱाळ् = अच्छा, पवित्र चरणों में ।
तोऴाअर् = भक्ति न करेंगे ।
अेनिन् = (ऐसा हो) तो ।
कट्ऱदनाल् = (वेद शास्त्रादि के) अध्ययन से ।
पयन् = लाभ ।
अन् = (अेन्न) क्या ?
कोल् = यह शब्द पद्य पूर्तिके लिये आया है । इसे तमिळ में "अशै" कहते हैं ।

अर्थ

शुद्ध-ज्ञान-स्वरूप ईश्वरके पवित्र चरणों में भक्ति नहीं किया हो तो पोथियां पढ पढ कर इकट्ठा किया विद्या से क्या लाभ ? कुछ भी नहीं ।

तमिळ

तूय अऱिवु वडिवान इरैवनुडैय नल्ल तिरुवडिहळैत् तोऴामले इरुपपारानाल् अवर् कट्ऱ कल्वियाल् आहिय पयन् अेन्न ? ओन्ऱुम् इल्लै ।

दोहा

विद्योपार्जन भी भला क्या आयगा काम
श्रीपदपर सर्वज्ञके यदि नहीं किया प्रणाम ।।

विशेष:

इसकुरळ् में, आदि भगवान ईश्वर को ज्ञान-स्वरूप बताया गया है । साधक के ज्ञानका फलित भक्ति है । भक्ति विना केवल ज्ञान अपूर्ण, एकांगी है ।

वेण्डुदल् वेण्डामै इलान् अडि शेर्न्दार्क्कु
याण्डुम् इडुम्बै इल ।।

वेण्डुदल् = विरुम्बुदल् = इच्छा करना, इच्छा।

वेण्डामै = अनिच्छा = द्वेष ।

इलान् = जिसे (दोनों) नहीं (उसके) ।

अडि = श्रीचरण ।

शेर्न्दार् = लीन हुए को

याण्डुम् = कभी भी ।

इडुम्बै = दुख; कष्ट ।

इल = नहीं है ।

अर्थ

प्रिय-अप्रिय; इच्छा-द्वेष ऐसे द्वन्द्व से अतीत ईश्वर के चरणों में अपने मन को लीन करनेवालों को कभी कहीं भी दुख नहीं है ।

तमिळ

विरुप्पु वॆरुप्पु इरण्डुम् इल्लाद कडवुळिन् तिरुवडिहळिल् मनदै (मुळुदुम्) शेलुत्तुहिरवर्हळुक्कु ऒरु पोदुम् तुन्बम् इल्लै ।

दोहा

राग-द्वेष विहीन के चरणाश्रित जो लोग ।
दुख न दे उनको कभी भवबाधा का रोग ।।

पिऱविप् पेरुंगडल् नीन्दुवर्, नीन्दार्
इऱैवन् अडि शेरादार् ।।

पिऱवि = जन्म ।

पेरुंगडल् = बडा (अपार) सागर ।

नीन्दुवर् = (तैरकर) पार करेंगे ।

नीन्दार = पार नही करेंगे । इऱैवन्; अडि; ये दोनो परिचित है ।

अर्थ हिन्दी

जो ईश्वर के चरणो में मिले हैं वे जन्म-मरण रूपी बडे (अपार) संसार सागर को तैर कर पार करेंगे । अन्य जो ईश्वर भक्त नही हैं वे उस सागर को पार नहीं कर पायेंगे ।

तमिळ

कडवुळ् पादत्तै वणंगुवोर् पिऱविक्कडलै नीन्दि करै शेरुवार् । अव्वाऱु तिरुवडि शेरादवर् (अन्दक्कडलै) नीन्दि कडक्क माट्टार् ।

दोहा

भव-सागर विस्तार से पाते हैं निस्तार ।
ईश-शरण विन जीव तो कर नहीं पाते पार ।।

दूसरा अध्याय

वर्षा-महिमा: वान् शिऱप्पु

अन्दक् कडवुळिन् आणैयाल्, उलहमुम् अदऱ्कु उऱुदियाहिय अऱम् पोरुळ् इन्बम् इवै नडक्क हेतुवहिय मऴैयिन् शिऱप्पुक् कूऱुदल् ।

वान् निन्ऱु उलहम् वऴंगि वरुदलान्
तान् अमिऴ्दम् अेन्ऱुणरर् पाट्ऱु

वान्निन्ऱु = वर्षा के आधार पर से ।
वऴंगिवरुदल् = जीवित रहना । फूलता फलता ।
तान = वही, उसेही ।
अमिऴ्दम् = अमृत; भोजन ।
उणरल् = समझना ।
पाट्ऱु = उचित । ठीक ।

अर्थ हिन्दी

उचित समय और मात्रा में वर्षा के होने से यह जगत समृद्ध चलता आ रहा है । इसलिये उस वर्षा को ही अमृत (जिलाने-वाला) समझना उचित है ।

तमिऴ्

कालत्तिल् वेण्डिय अळवु मऴै पेय्वदाल् उलहम् (मक्कळ्) वाऴ्न्दु वरुहिऱ्दु । अदनाल् अन्द मऴैये अमिरुदम्– संजीविनि उणवु– अेन अऱिदल् वेण्डुम्

दोहा

उचित समय की वृष्टि से जीवित है संसार ।
मानी जाती है तभी वृष्टि अमृत की धार ।।

तुप्पार्क्कु तुप्पाय तुप्पाक्कि
तुप्पार्क्कु तुप्पु आयदुम् मळै ।

तुप्पु = भोजन ।

तुप्पार्क्कु = खानेवालेको ।

तुप्पाय = खाने योग्य ।

तुप्पाक्कि = खाने की चीजें पैदा करके ।

तुप्पायदुम् = जो खुद भी आहार बना ।

मळै = वर्षा ।

अर्थ हिन्दी

खानेवालों को (जीवोंको) योग्य खाद्या पदार्थ पैदा करके, साथ साथ उनके लिये एक खाद्या पदार्थ भी बनती है वर्षा ।

तमिळ

उयिर्हळुक्कु उणवु तेवैयानदु । अन्द उणवुप् पोरुळ्हळै विळैवित्तु अत्तुडन् तानुम् (मळै जलम) ओरु आहारम् आहिरदु ।

दोहा

आहारी को अति रुचिर अन्नरूप आहार ।
वृष्टि सृष्टि कर फिर स्वयम् बनती है आहार ।।

विशेष

जल विना जीव नहीं, जीव विना जगत नहीं । जगत को ईश्वर माने तो जल को ही उस ईश्वर का प्रत्यक्षरूप मानें । इसी कारण से यह परिच्छेद ईशवन्दना के बाद रखा गया है ।

दानम् तवम् इरण्डुम् तंगा वियन् उलहम्
वानम् वऴंगादु अेनिन् ।।

दानम् = दान ।

तवम् = तप । ये संस्कृत शब्द हैं ।

तंगा = न टिकेगा । तांगुदल् = ढोना; टेक देना ।

वियन् = पेरिय = फैलाहुआ ।

वानम् = आकाश, बारिश ।

वऴंगादु अेनिन् = पानी न बरसे तो ।

अर्थ हिन्दी

अगर आकाश के बादल पानी न बरसे तो इस फैले हुए जगत में दान और तप दोनों नहीं टिकेंगे ।

तमिऴ

आहायम् मऴै पेय्याविडिल् इन्दप् पेरिय (परन्द) उलहत्तिल् (पिऱर् पोरुट्टु) दानमुम्; (तम् पोरुट्टु शेय्युम्) तवमुम् निलैक्क माट्टा ।

दोहा

इस विस्तृत संसार में, दान पुण्य तप-कर्म ।
यदि पानी बरसे नहीं, टिके न दोनों कर्म ।।

नीर् इन्ऱु अमैयादुउलहु ऍनिन् यार् यार्क्कुम्
वान् इनऱु अमैयादु ओऴुक्कु ।।

नीर् इन्ऱु = पानी के विना ।
अमैयादु = व्यवस्थित नहीं चलेगा ।
यार् यार्क्कुम् = किसी को भी ।
ओऴुक्कु = ओऴुक्कम् = शील । सदाचार, नीति ।

अर्थ हिन्दी

पानी के अभाव में किसी का भी जीवन व्यवहार नहीं चल सकता, वैसा ही वर्षा के अभाव में सदाचार और सामाजिक नीति व्यवस्थित नहीं चलेगी ।

तमिळ

ऍवर्क्कुम् नीर् इल्लामल् उलह वाऴुक्कै नडै पॆरादु ऍन्ऱाल् मऴै (इन्ऱि) इल्लामल् ओऴुक्कमुम् निलैक्कादु ।

दोहा

नीर विना भूलोक का ज्यो न चले व्यापार ।
कभी किसी में नहीं टिके वर्षा विना आचार ।।

विशेष

काल्डवेल महाशय ने कहा है कि शायद "नीर" शब्द तमिळ से संस्कृत में आया है, तमिऴ नीर् तण्णीर् वॆन्नीर् । तिरुवळ्ळुवर के मतानुसार 'ओऴुक्कम्' शील ही धर्म का आधार है ।

तिसरा अध्याय

नीत्तार् पोरुमैः मुनियोंकी महत्ता

अदावदु मुट्रुम् तुरन्द मुनिवर्हळ् पेरुमै कूरुवदु । अवरहळ्तान् अरमुदर् पोरुळ्हळै उलहिर्कु उळ्ळवारु उणर्त्तुहिरवर्हळ् ।।

ओळुक्कत्तु नीत्तार् पेरुमै विळुप्पत्तु
वेण्डुम् बनुवर् (ल्) तुणिवु ।।

नीत्तार् = योगारूढ भक्त; गीताकी भाषामें ।
ओळुक्कत्तु = स्वधर्माचरण में ही ।
विळुप्पत्तु वेण्डुम् = सबसे श्रेष्ठ जो हो उसे चाहनेवाला ।
बनुवल् = विविध प्रकारके धर्म ग्रन्थ ।
तुणिवु = (कथन) निष्कर्ष

अर्थ हिन्दी

अपने वर्ण और आश्रम के अनुसार स्वधर्माचरण करते हुए सन्यास लेनेवाले की महिमा को ही सब धर्मशास्त्र सबसे श्रेष्ठ मानते हैं ।

तमिळ

तनक्कु उरिय ओळुक्कत्तिल् निलैत्तु निन्रु (अत्तुडन्) पट्रैयुम् विट्टवर्हळुडैय पेरुमैयै शिरन्दताह पुहळ्न्दु कूरुवदे अर नूल्हळिन् सारमाहुम् ।

दोहा

सदाचार संपन्न जो, यदि यति हों वे श्रेष्ठ ।
धर्मशास्त्र सब मानते, उनकी महिमा श्रेष्ठ ।।

शयऱ्करिय शेय्वार् पेरियर्, शिऱियर् शेयऱ्करिय शेय्हलादार् ॥

पेरियर् = बडे, महान लोग ।
शिरियर् = छोटे ।
शेयऱ्कु अरिय = करने में कठिन् ।
शेय्हलादार = न कर सकनेवाले (होते हैं)

अर्थ हिन्दी

(दूसरों से) न हो सके ऐसे असाध्य कार्यों को पूरा कर सकनेवाले ही बडे, महान होते हैं। ऐसा न करसकनेवाले छोटे होते हैं।

तमिळ

(पिऱर्) शेय्य मुडियाद अरुमैयान शेयल्हळै शेय्यक् कूडियवर्हळे पेरियोर्। अव्वारु अरिय करुमंगळै शेय्यमाट्टादवर् शिऱियोर्।

दोहा

करते दुष्कर कर्म हैं, जो हैं साधु महान् ।
दुष्कर जो नहीं कर सके, अधम लोग वे जान ।।

शेय्	शेयल्	शेयदल्
॥	॥	॥
करो	कर्म	करना

गुणमेन्नुम् कुन्ऱेरि निन्ऱार्, वेहुळि
कणमेनुम् कात्तल् अरिदु ।।

गुणम् = गुण (संस्कृत) सतगुण
कुन्ऱु = चट्टान् ।
एऱि = चढकर ।
निन्ऱार् = खडे हैं (जो) संज्ञा
वेहुळि = शिनम् = क्रोध ।
कणमेनुम् = पल भरके लिये भी
कात्तल् = सहना
अरिदु = दुष्कर है

हिन्दी अर्थ

गुण-रूपी चट्टान पर चढ कर, स्थिर खडे महान व्यक्ति के क्रोध को पल भर का क्यों नहो रोकना कठिन है ।

तमिळ

नल्ल गुणंगळान कुन्रिल् एरि निर्प्पवरुडैय शिनत्तै, अदु कण नेरमे इरुप्पदायिनुम्; तडुप्पदु कडिनम् ।।

दोहा

सद्गुण रूपी अचलपर जो हैं चढे महान ।
क्षण का उन का क्रोध भी सहना दुष्कर जान ।।

चौथा अध्याय   अऱन् वलियुऱत्तल् : धर्म की महत्ता

अम्मुनिवराल् उणर्त्तप्पट्ट मून्रुळ् (अरम, पोरुळ् इन्बम) पोरुळुम् इन्बमुम् पोल् इल्लादु अऱम् इम्मै मरुमै वीडु अन्नुम् मून्ऱैयुम् पयत्तलाल् अवट्ऱै विड वलियुडैय्दु अन्बदु कूरल्

शिऱप्पु ईनुम् शेल्वमुम् ईनुम् अऱत्तिनूंगु
आक्कम् अवनो उयिर्क्कु ।।

शिरप्पु = वीडु = मोक्षलाभ
शेल्वम् = संपत्ति ।
ईनुम् = देगा ।
अऱत्तिनूंगु = धर्म से बढकर ।
आक्कम् = शक्ति; लाभ ।
उयिर्क्कु = मक्कळुक्कु ।

हिन्दी अर्थ

धर्माचरण सर्वश्रेष्ठ लाभ मोक्ष भी दे सकता है; इहलोक मे संपत्ति भी प्रदान करेगा । फिर जीवों कों उससे बढ कर क्या ला हो सकेगा ।

तमिळ

अऱम् शिऱप्पैयुम् अळिक्कुम्; शेल्वत्तैयुम् अळिक्कुम् । आहैयाल् वाऴ्हिन्ऱ उयिर्हळुक्कु अऱत्तैविड नन्मैयानदु वेऱु यादु ?

दोहा

मोक्षप्रद तो धर्म है धन दे वही अमेय
उस से बढ कर जीव को है क्या कोई श्रेय ।
सर्व श्रेष्ठ प्रसाद मोक्ष को "शिरप्पु" कहा है

अऱत्तिनू उंगु आक्कमुम् इल्लै, अदनै
मऱत्तिलिन् ऊंगिल्लै केडु

ऊंगु = से, बढकर
आक्कम् = ऊपर, ऊपर जाना; श्रेयस्
मऱत्तल् = भूलना ।
केडु = नाश ।

हर एक के जीवन के लिये धर्म से बढ कर भला दूसरा नहीं है । वैसे उस धर्म को भूलने से बढ़ कर बुरी चीज भी नही है ।

तमिळ

ओव्वोरुवरुडैय वाऴ्क्कैक्कुम् अऱम् शेय्दलै विड नन्मैयुम् इल्लै; अदै मऱत्तलै विड केडुम् इललै ।
मऱप्पदु मयक्कम् कारणमाह ।

दोहा

बढकर कहीं सुधर्म से अन्य न कुछ भी श्रेय
भूला तो उस से बडा और न कुछ अश्रेय ।।

अऴुक्कारु अवा वेहुळि इन्नाच्चोल् नान्गुम्
इऴुक्का इयन्ऱदु अऱम् ।।

अऴुक्कारु (पोऱामै) = ईर्ष्या ।
अवा = काम, वासना;
वेहुळि = क्रोध ।
इन्नाच्चोल् = कठोर वचन ।
इऴुक्का इयन्ऱदु = दोष मान कर बरतनेवाला ।

अर्थ हिन्दी

ईर्ष्या, दुर् इच्छा, क्रोध (द्वेष), और कठोरवचन (पुरुष-वचन) इन चार दोषों से बच कर जो आचरण होता है वही धर्म है ।

तमिऴ

पोऱामै, आशै, शिनम् कडुम्शोल् अहिय नान्गु कुट्रंगळैयुम् तविर्त्तु नडप्पदे अऱमाहुम् ।

दोहा

क्रोध लोभ फिर कटुवचन् और जलन ये चार
इन से बचकर जो हुआ वही घर्मका सार ।।

"आशै" तमिळ भाषा में विशिष्ठ अर्थ रखता है ।

अऱतत्ताऱु इदुवेन वेण्डा, शिविहै
पोरुत्तानोडु ऊर्न्दान् इडै ।।

अऱत्तु = धर्म का
आऱु = परिणाम् ।
शिविहै = शिबिका ।
पोरुत्तान् = कन्धेपर ढोनेवाला ।
ऊर्न्दान् = उसपर सवार होनेवाला ।
इडै = बीच;

अर्थ हिन्दी

शिबिका को ढोनेवाले तथा उस में चलनेवाले इन दोनोंके बीच धर्माचरण का परिणाम प्रत्यक्ष दीखने से उसे अन्य सबूत बताकर कहने की आवश्यता नही है ।

तमिळ

पल्लक्कैच् चुमप्पवनुम् अदन् मेलिरुन्दु शेल्वानुमाहिय अवर्हळिडैये अऱत्तिन् पयन् इदु अन्ऱ् कूऱ् वेण्डाम् । ताने तेरियुम् ।

दोहा

धर्म-कर्म के सुफल का, क्या चाहिये प्रमाण
शिबिकारूढ कहार के, अंतर से तू जान ।।

अध्याय ३०

वाय्मै = सत्य; ऋतं; ।।

वाय्मै अेनप्पडुवदु यादेनिन् यादोन्रुम्
तीमै इलाद शेयल् ।।

शब्दार्थ

वाय्मै = सत्य, ऋतं ।
अेनप्पडुवदु = जिसे कहा जाता है ।
यादु = क्या है ।
अेनिन् = ऐसा पूछे तो ।
यादु ओन्रुम् = कुछ भी; कोई भी,
तीमै इला = नुकसान; बुराई; न हो, (ऐसा)
शोलल् = बोलना (शोल्लल्)

भावार्थ

सत्य की परिभाषा क्या है, ऐसा कोई पूछे तो वह दूसरों को जरा भी कष्ट या तकलीफ न हो ऐसे वचन बोलना है ।

तमिळ

वाय्मै अेन्बदु अेन्न अेन्रु यारावदु केट्टाल् अदु मट्ऱवर्क्कु ओरु शिऱिदुम् तीमै इल्लाद शोऱ्कळै शोल्लुम् (पेशुम्) अऱम् (धर्म) । 'यादु' प्रचीन 'अेदु' अर्वाचीन । तीमै > < नन्मै (भलाई) ।

दोहा

परिभाषा है सत्य की, वचन विनिर्गत-हानि ।
सत्य-कथन से अल्प भी, न हो किसी को ग्लानि ।।

पोय्म्मैयुम् वाय्मैयिडत्त पुरैतीऱ्न्द
नन्मै पयक्कुम् अनिन्

शब्दार्थ

पुरै तीऱ्न्द = दोष-रहित; निर्दोष ।
नन्मै = (दूसरोंकी) भलाई ।
पयक्कुम् = प्रदान करेगा; देगा ।
अनिन् = ऐसा हो (तो) ।
पोय्म्मैयुम् = झूठेशब्द भी । अनृत भाषणभी ।
वाय्मै = सत्य (के)
इडत्त = बराबर (ही है)

भावार्थ:

(सुननेवालेको) निर्दोष भलाई प्रदान करनेवाले हों, तो अनृत शब्दों का उच्चार भी सत्य के बराबर माना जायगा ।

तमिळ

कुट्रम् तीर्न्द (इल्लाद) नन्मैयै विळैक्कुमायिन् (तरुमानाल्) पोय्यान शोऱ्कळुम् (नडककाददै शोल्लल्) वाय्मै (मैय्) अन्ऱु करुदत् तकक इडत्तै (स्थान) पेरुम् ।

दोहा

मिथ्या-भाषण यदि करे, दोष रहित कल्याण ।
तो यह मिथ्या-कथन भी, मानो सत्य समान ।।

तन् नेञ्ज़ु अऱिवदु पोय्यऱ्क पोय्त्तपिन्

तन्नेञ्ज़े तन्नैच् चुडुम् ॥

तन् नेञ़्जु = अपना मन; अन्तरात्मा।
अऱिवदु = जिसे जानता है (उसके बारे मे)
पोय्यऱ्क = झुठी बातें न बोलें।
पोय्त्तपिन् = अगर असत्य बात बोले।
तन् नेञ़्जु = (तो) अपना ही दिल।
तन्नै = खुदको। अपने को,
शुडुम् = जलायगा।

भावार्थ हिन्दी

कोई भी जान बूझ कर असत्य बातें न बोलें। अगर ऐसा बोले तो बाद उसका दिल ही उसे कोसेगा।

तमिळ

ओरुवन् तन्नुडैय मनम् अऱिय पोय् पेशक्कूडादु। पेशिनाल् अदैक् कुऱित्तु अवन् नेञ़्जे अवनै वरुत्तुम्।
नेंजारप् पोय् तन्नै शोल्लवेण्डाम्।

दोहा

निज मन समझे जब स्वयं, झूठ न बोलें आप।
बोलें तो फिर आप को, निज मन दे सन्ताप॥

मनत्तोडु वाय्मै मोऴियिन् तवत्तोडु
दानम् शेय्वारिन् तलै ।।

मनत्तोडु = (ओरुवन्) दिल से; मन से; अन्तरात्मासे।
वाय्मै = सत्य (वचन)।
मोऴियिन् = बोले (तो)।
तवत्तोडु = तप के साथ।
दानम् शेय्वारिन् = दान करनेवालों से (वह)।
तलै = श्रेष्ठ; शिर; शिरोमणि।

अर्थ हिन्दी

अपना अंतरात्मा जिसे सत्य माने उसे ही, अगर कोई बोले, (कहे) तो वह तप और दानादि करनेवालों से भी श्रेष्ठ होगा (माना जायेगा)।

तमिऴ

ओरुवन् तन् मनम् ओप्प उण्मै पेशिनाल् अदु तवमुम् दानमुम् शेय्वोरै विड शिऱन्ददु ।।

मनम + ओडु; तवम् + ओडु
ओडु त्रितीय विभक्ति। कविता में "ओडु" ह्रस्व आया है।

दोहा

दान-पुण्य तप-कर्म भी, करते हैं जो लोग।
उनसे बढ़ हैं, हृदय से, सच बोलें जो लोग ।।

**अॆल्ला विळक्कुम् विळक्कल्ल शान्ऱोर्क्कुप्
पोय्याविळक्के विळक्कु ।।**

शब्दार्थ

अॆल्ला = सब (याने बाहर चमकनेवाले ।
विळक्कुम् = दीप ।
विळक्कु + अल्ल = दीपक नहीं है । (किन को)
शान्ऱोर्क्कु = श्रेष्ठ लोगों को ।
पोय्या = (दिलका अंधकार दूर करनेवाला) अनृत से बचानेवाला ।
विळक्के = ज्योतिही ।
विळक्कु = दीपक है ।

भावार्थ हिन्दी

बाहर चमकनेवाले सब सच्चे दीप नहीं है । सज्जनों को तो दिल का अंधकार दूर करनेवाला अनृत से बचानेवाला मणिदीप ही सच्चा दीप है ।

विशेष:

बाहर प्रकाश करनेवाला से मत्लब सूर्य चन्द्र से भी है । जो अंधेरा हटाता है शास्त्रज्ञानसे होनेवाला प्रकाश भी सच्चा दीप नहीं । केवल सत्याचरण ही "मणिदीप" है ।

तमिळ

अॆल्ला विळक्कुहळुम् शान्ऱोर्क्कु विळक्कु आहा पोय्यामैये विळक्काहुम्

दोहा

दीपक सब दीपक नहीं, जिनसे हो तम-नाश ।
सत्य-दीप ही दीप है, पावें साधु प्रकाश ।।

अध्याय ३१

वेहुळामै = अक्रोध

**शेल्लिडत्तुक् काप्पान् शिनम् काप्पान् अल्लिडत्तुक्
काक्किनेन् कावाक्कालेन्**

शब्दार्थ

शिनम् = क्रोध । (अपना)
शेल् इडत्तु = जहां चल सकेगा (वहां) ।
काप्पान् = (जो उसे) रोक लेगा (वही) ।
काप्पान् = (असल में) कोघ को रोकनेवाला है ।
अल् इडत्तु = (क्योंकि) दूसरे स्थानों में (जहां न चल सके वहां)।
काक्किन् अेन् = रोकने से क्या ?
कवाक्काल अेन् = न रोकने से क्या ?

भावार्थ हिन्दी:

जहां अपना अधिकार या बल चले वहां अपने क्रोघ को रोकना ही अक्रोघ है। अन्यान्य स्थानों में उसे रोकना, नही रोकना दोनों बराबर है ।

तमिळः

तन् शिनम् पलिक्कुम् इडत्तिल् अदै वरामल् काप्पवने उण्मैयिल् शिनम् काप्पवन् आवान् । पलिक्काद इडत्तिल् कात्ताल् अेन्न ? काक्का विट्टाल् अेनन ? इरण्डुम सममे ।।

दोहा

जहां चले वश क्रोध का, कर उसका अवरोध ।
अवश क्रोध का क्या किया, क्या न किया उपरोध ।।

तन्नैत्तान् काक्किन् शिनम्काक्क कावाक्काल्
तन्नैये कोल्लुम् शिनम् ।।

शब्दार्थ

तन्नै = अपने को (दुखों से)।
तान् = आपही या खुद।
काक्किन् = रक्षा करना चाहे (तो)।
शिनम् = क्रोध को (अपने में उठनेवाला)।
काक्क = रोके (रक्षा कर रखे)।
काक्कावाल् = ऐसा उसे न रोके (तो)।
शिनम् = वह क्रोध।
तन्नैये = अपने को ही, क्रोधी को ही।
कोल्लुम् = मार डालेगा; नष्ट करेगा।

भावार्थ हिन्दी

अगर कोई अपनी आत्म-रक्षा कर लेना चाहे तो। अपने क्रोध को संभाल ले। ऐसा नही किया तो क्रोध खुद को नाश करेगा।

तमिळ

ओरुवन् तन्नैतान् कात्तुक् कोळ्वदानाल् शिनम् वरामल् कात्तुक् कोळ्ळ वेण्डुम्। अप्पडि काक्का विट्टाल् अन्द शिनम् तन्नैये अऴित्तु विडुम्।

दोहा

रक्षा हित अपनी स्वयं, बचो क्रोध से साफ।
यदि न बचो तो क्रोध ही, तुम्हें करेगा साफ।।

अध्याय ३२ इन्ना शेय्यामै = अहिंसा

शिऱ्प्पीनुम् शेल्वम् पेऱिनुम् पिऱर्क्कु इन्ना
शेय्यामै माशट्ऱार् कोळ् ।

शब्दार्थ

शिऱप्पु ईनुम् = (समाजमें) बडप्पन देनेवाले
शेल्वम् = धन दौलत (को)
पेरिनुम् = प्राप्त कर सकने पर भी
पिऱर्क्कु = दूसरों को
इन्ना शेय्यामै = दुख न देना, तकलीफ न करना
माशट्ऱार् = निष्पाप सज्जनों को
कोळ् = जीवन सिद्धांत होगा ।

भावार्थ: हिन्दी:

हिंसा द्वारा समाज में बडप्पन देनेवाली संपत्ति प्राप्त हो सके तो भी दूसरों को दुख न देना ही निर्दोष व्यतिओंका उसूल है, जीवन सिद्धान्त ।

तमिळ

शिऱप्पै तरुहिन्ऱ शेल्वत्तैप् पेरुवदाह इरुन्दालुम् (अदै-विड) पिऱर्क्कुत् तुन्बम् शेय्यादु इरुप्पदे माशु (दोष) अट्ऱ वर्हळुडैय कोळ्है आहुम् ।

दोहा

तपप्राप्त धन भी मिले, फिर भी साधु सुजान ।
बुरा न करना अन्य को, माने लक्ष्य महान ।।

विशेष

स्वार्थ-वश होनेवाली हिंसा को इस कुरळ द्वारा निषेध हुआ ।

इन्ना शेय्दारै ओरुत्तल् अवर् नाण
नन्नयम् शेय्दु विडल् ।।

शब्दार्थः

इन्ना = (हमें) दुख, हिंसा
शेय्दारै = करनेवालों को
ओरुत्तल = दण्ड देना
अवर् नाण = वे लज्जित हों; शर्मिन्दा हो (ऐसा)
नन्नयम् = (उनको) भलाई
शेय्दु = कर के
विडल् = छोड देना (दोनोंको भूल ही जाना)

भावार्थ हिन्दीः

जो हमें बुराई करे उसको दंड देना उसे लज्जा आये ऐसी भलाई कर देना है। और उनकी बुराई और हमारी भलाई दोनों को भूल भी जाना।

तमिळः

इन्ना शेय्दवरैत् तण्डित्तल्, अवरे नाणुम्पडियाह नल्लदु शेय्दु अवरुडैय तीमै नमदु नन्मै इरण्डैयुमे मरन्दु विडुवदे।

दोहा

बुरा किया तो कर भला, बुरा भला फिर भूल।
पानी पानी हो रहा, बस उसको यह शूल।।

विशेषः

इस कुरळ में बुराई करनेंवाले को जीतने का उपाय बताया। ईसा तथा गान्धी दोनों को स्मरण देनेवाला कुरळ।

अऱिविनाल् आहुवदु उण्डो पिऱिदिनोय्
तन्नोय् पोल् पोट्ऱाक् कडै ।।

शब्दार्थ :

पिऱिदिन् = दुसरे (जीवों) के
नोय् = दुख, व्याधि, बीमारी
तन् नोय् पोल् = अपनी ही जान पर आया दुख जैसा
पोट्ऱा कडै = मानकर रक्षा न करने से
अऱिविनान् = ज्ञानी के अपने ज्ञान से
आवदु उण्डो = कुछ लाभ होता है क्या ? नहीं ।

भावार्थ हिंदी

दूसरे जीवों के दुख को अपना ही दुख समझ कर उनकी देखभाल न किया तो प्राप्त ज्ञान से क्या लाभ है ? कुछ भी नहीं ।

तमिळ

पिऱ उयिरिन् तुन्बत्तै तन् तुन्बम् पोल् करुदि, अव्वुयिरै काप्पाट्ऱा विट्टाल् (तान पेट्ऱ) अऱिविनाल् आहुम् पयन् उण्डो ? इल्लै ।

दोहा

माने नहिं पर-दु:ख को, यदि निज दु:ख समान ।
तो होता क्या लाभ है, रखते तत्वज्ञान ।।

विशेष

कडै आपादान कारक । गीताके आत्मौपम्य का स्मरण देनेवाला यह कुरल ।

पिऱ्र्क्कु इन्ना मुऱ्पहल् शेय्यिन् तमक्कु इन्ना पिऱ्पहल् ताने वरुम् ।।

शब्दार्थ:

पिऱ्र्क्कु = दूसरों को
मुऱ्पहल = सबेरे (१२ बजे के पहले)
इन्ना शेय्यिन् = बुराई करे (तो)
तमक्कु = अपनेको (करनेवालों को)
पिऱ्पहल् = दोपहर बाद
इन्ना = दु:ख
ताने वरुम् = अपने आप आयगा ।

भावार्थ हिन्दी:

अगर हमने सबेरे दूसरे किसी पर हिंसा की तो हमें उसी शामको ही प्रतिफल में दुख अपने आप आयगा ।

तमिळ:

मुऱ्पहलिल् पिऱरुक्कु तुन्बम् शेय्दाल् (अव्वारु शेय्दवर्-क्के) पिऱ्पहलिल् तुन्बम् तामाहवे वरुम् ।

प्रतिफल का ईश्वरीय नियम अचूक है । इस पर जोर दिया

दोहा

दिया सबेरे अन्य को, यदि तुमने सन्ताप ।
वही ताप फिर साँझ को, तुम पर आवे आप ।।

नोयेल्ला (म्) नोय् शेय्दार् मेल्वा (म्) नोय् शेय्यार् नोयिन्मै वेण्डुबवर् ।।

शब्दार्थ:

नोय् इन्मै = दुखका अभाव; न होना
वेण्डुबवर = चाहनेवाले, इच्छा करनेवाले
नोय् शेय्यार = दूसरोंको हिंसा न करेंगे । दुख न देंगे बुराइ न करेंगे, (क्यों कि)
नोय् अेल्लाम् = (दुनियाके) सारे दुख
नोय् शेय्दार मेलवाम् } = बुराई करनेवाले पर ही पडता है ।

भावार्थ

दुख देनेवालों पर सब दुख पडेगा इसवास्ते (संसार के) दुख निवारण चाहनेवाले किसी को दुख नही देंगे । हिंसा नही करेंगे ।

तमिळ

तुन्बम् अेल्लाम् तुन्बम् शेय्दवरैये शेरुम् । आहैयाल् तुन्बम् इल्लामल् वाऴ विरुम्बुहिरवर्हळ पिरर्क्कु तींगु शेय्यमाट्-टार्हळ् ।।

दोहा

जो दुख देगा अन्य को, स्वयं करे दुख-भोग ।
दुख-वर्जन की चाह से, दु:ख न दें बुध लोग ।।

विशेष

शेय्; शेरवार्; शेय्यार; इनको घ्यान से समझे ।

अध्याय ३३

कोल्लामै = न मार डालना = जीव रक्षा

ओन्ऱाह नल्लदु कोल्लामै मट्ऱदन्
पिन्शारप् पोय्यामै नन्ऱु ।।

ओन्ऱाह = (धर्मों में) एक ही लेना हो (तो)

नल्लदु = श्रेष्ठ (धर्म)

कोल्लामै = जीवो को न मार डालना

मट्ऱु = दूसरे;

अदन् = उसके

पिन्शार = पीछे, बाद; दूसरे स्थान में ।

पोय्यामै = झूठ नही बोलना ।

नन्ऱु = अच्छा है ।

भावार्थ हिन्दी:

बेजोड एक ही श्रेष्ठ धर्म केवल जीवों को न मारडालना-जीव-रक्षा है । दूसरे उसके बाद या पीछे झूठ नहीं बोलना श्रेष्ठ माना जा सकता ।

तामिळ:

इणै इल्लाद ओर् अऱमाहक् कोल्लामै नल्ल़दु । अदऱ्कु अडुत्तदु आह कूऱत्क्कदाह पोय्यामै नल्लदु

दोहा

प्राणी-हनन-निषेध का, अद्वितीय है स्थान ।
तदनन्तर ही श्रेष्ठ है, मिथ्या-वर्णन मान ।।

पहुत्ततुण्डु पल्लुयिर् ओम्बुदल् नूलोर्
तोहुत्तवट्रुळ् अेल्लाम् तलै ।।

पहुत्तु उण्डु = (भूखों से) बाँटकर भोजन कर के
पल्उयिर् = दूसरे (पांच तरहके) जीवों के
ओम्बुदल् = रक्षा करना
नूलोर् = शास्त्रोंके रचयितागण
तोहुत्तवट्रुळ् = जो (धर्म के) संहिता बनाये है
अेल्लाम् = (उन्) सब में ।
तलै = शिरोमणि धर्म है; श्रेष्ठ है ।

भावार्थ हिंदी

जो मिले उसे बांटकर भोगना और दूसरे जीवों की भी रक्षा करना (संभालना) यही धर्मशास्त्रोमे बताये धर्मो म सब से श्रेष्ठ है ।

तमिळ

तन्ककु किडैत्तदै पहुत्तुक् कोडुत्तु तानुम् उण्डु अदोडु पल उयिर्हळैयुम् काप्पाटरुदल् अऱ नूलार् तोहुत्त अऱंगळ् अेललावट्रिलुम् तलैयान शिऱन्द अऱम् आहुम् ।।

दोहा

खा ले बाँट क्षुधार्त को, पालन कर सब जीव
शास्त्रकार मत में यही, उत्तम नीति अतीव ।।

तन्नुयिर् नीप्पिनुम् शेय्यऱ्क तान् पिऱिदु
इन्नुयिर् नीक्कुम् विनै ।।

तन् + उयिर् = (ऐसा न करने से) अपनी जान
नीप्पिनुम् = निकल जाने जैसा खतरा होने पर भी
शेय्यऱ्क = (उसे) नहीं करना । कौनसा काम ?
तान् पिऱिदु = अपनेसे दूसरे
उयिर्क्कु = जान को
नीक्कुम् विनै = लेना का काम

भावार्थ हिन्दी

अपनी जान की रक्षा के लिये भी कोई दूसरे जीव की हनन न करे ।

तमिळ

तन् उयिरे पोवदा यिनुम्, ओरुवन् पिऱ उयिर्हळै कोल्लुदलै तविऱ्क्क वेण्डुम् "तननै कोल्ल वरुम् पशुवै कोल्लाम्" अेन शोल्लुवदु उण्डु । अदुवुम् शरियल्ल ।

मनुष्य के प्राण की रक्षा के लिए प्रयोग के तौर पर इतर जीवों पर जो प्रयोग चलता है वह भी त्याज्य है ।

दोहा

प्राण-हानि अपनी हुई, तो भी हो निज धर्म ।
अन्यों के प्रिय प्राण का, करें न नाशक कर्म ।।

४१७–पी० एम०एच० /६७ प्रधान मन्त्री भवन
नई देहली, जुलाई १९,१९६७

प्रिय श्री. शंकरन्,

आपका पत्र मिला। तमिल–प्रवेश नागरी लिपि के दोनों पाठ देखकर खुशी हुई। छप जाने पर पूरी पुस्तक देखूंगी।

सधन्यवाद,

भवदीया,
सही–इन्दिरा गांधी

* * *

६६७–पी० एम० ओ० /६७ प्रधान मन्त्री भवन
नई देहली, ९ अगस्त, १९६७

प्रिय श्री. शंकरन्,

आपकी पुस्तक "तामिल–प्रवेश : नागरी लिपि" मिली। उसको देखकर प्रसन्नता हुई। **भारतीय भाषाओं को समीप लाने का यह प्रयास बहुत अच्छा है।** धन्यवाद।

भवदीया,
सही–इन्दिरा गांधी

श्री. रा० शंकरन्
नयी तालीम विद्यापीठ, तमिल विभाग.
सर्व सेवा संघ
पोस्ट आफिस सेवाग्राम; जिला वर्धा।

तमिल नागरी केन्द्र

अब तक का प्रकाशन --

तमिऴ् प्रवेश नागरी लिपि
तमिऴ् प्रवेश तमिऴ् लिपि
तमिऴ् नागरी शिक्षण पत्रिका-नमूना
तिरुक्कुरळ - पहला भाग (शब्दार्थ सहित)

आगे की योजना --

तिरुक्कुरळ दूसरा भाग
गीतै पेरुरैहळ् (पू. विनोबा).

सुब्रह्मण्य भारती - कवितायें
इस योजना में दिलचस्पी रखनेवाले लिखियेगा -

पता - रा. शंकरन्
आश्रम प्रतिष्ठान,
सेवाग्राम : (वर्धा)

प्रमुख विक्रेता :
परंधाम प्रकाशन, **पवनार**
(जि. वर्धा)

मूल्य ७५ पैसे
(डाक खर्च अलग)